किन्हीं तीन पुराणों का परिचय –

B.A. I st + III yr.
Uma Pathak
Deptt. of SKT.

1. **ब्रह्मपुराण** – इसे 'आदि पुराण' भी कहते हैं। प्राचीन माने गए सभी पुराणों में इसका उल्लेख है। ऐसी मान्यता है कि व्यास ने इसे ही सर्वप्रथम लिखा था। विष्णु, शिव, भागवत, नारद, ब्रह्मवैवर्त्त, मार्कण्डेय तथा देवीभागवत में इसकी श्लोक संख्या दस हजार कही गयी है। जबकि लिंग, वराह, कूर्म, वराह तथा मत्स्य पुराणादि के अनुसार तेरह हजार श्लोक हैं। मुम्बई संस्करण में तेरह हजार सात सौ सत्तासी श्लोक हैं।

अन्य पुराणों की तरह इसमें भी जगत की सृष्टि, मनु की उत्पत्ति, उनके वंश का वर्णन, देवताओं, देव-योनियों तथा अन्य प्राणियों की उत्पत्ति, पृथ्वी का भूगोल, नरक तथा स्वर्ग का वर्णन है। इस पुराण का अधिकांश भाग तीर्थों के माहात्म्य से भरा है, विशेषकर उत्कल प्रदेश के पवित्र स्थलों और मन्दिरों का सूक्ष्म वर्णन है। शिव-पार्वती के विवाहादि आख्यानों के साथ शैव तीर्थों का भी चित्रण किया गया है। कृष्ण की बाललीला तथा अद्भुत कर्मों का वर्णन (अध्याय १८० – २१२) के अतिरिक्त विष्णु के अवतारों का वर्णन, श्राद्धकर्म, वर्णाश्रम-धर्म एवं विष्णुपूजन की गरिमा का वर्णन अन्तिम कुछ अध्यायों में है। इसमें कुल २४५ अध्याय हैं।

इसका एक परिशिष्ट है जिसमें १२५० ई० के लगभग बने कोणार्क के सूर्य मंदिर का उल्लेख है।

(2) **पद्मपुराण** – यह विशाल पुराण ६४१ अध्यायों तथा ४८००० श्लोकों का है। मत्स्य पुराण के अनुसार इसमें ५५ हजार तथा ब्रह्म-पुराण के अनुसार ५९ हजार श्लोक थे। यह पाँच खण्डों में विभक्त है – सृष्टि खण्ड, भूमिखण्ड, स्वर्गखण्ड, पाताल खण्ड तथा उत्तरखण्ड। इसका प्रवचन नैमिषारण्य में लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा ने किया था। इस खण्ड में (सृष्टि खण्ड में) कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति और उनसे सृष्टि की रचना वर्णित है। इस खण्ड में पाँच पर्व हैं सृष्टि-वर्णन,

पूर्व- चंद्रवंशी वर्णन, देवासुर संग्राम, तीर्थ माहात्म्य, राजवंशावली, रामायण-कथा, तारकासुर वध, इत्यादि निरूपित है। भूमिखण्ड में सोमशर्मा की कथा तथा उसी का प्रह्लाद के रूप में पुनर्जन्म की बात कही गयी है। तीर्थों की पवित्रता दिखाते हुए आख्यानों से यह सिद्ध किया गया है कि पत्नी, पुत्र आदि भी तीर्थ हैं। विष्णुभक्ति, च्यवन ऋषि की कथा एवं विष्णु-शिव की एकता का निरूपण भी यहाँ किया गया है। स्वर्गखण्ड में देव, भूत आदि लोकों का विवरण एवं प्रसिद्ध आख्यान हैं, जिनमें शकुन्तला और उर्वशी के आख्यान भी हैं। कर्मकाण्ड पर भी इसमें प्रकाश डाला गया है। पातालखण्ड में नागलोक की कथा के प्रसंग में रावण का उल्लेख होने से रघुवंश पर आधारित रामकथा दी गयी है। राम के अश्वमेध तथा वाल्मीकि के आश्रम में ही व्यास द्वारा अष्टादश पुराणों की रचना का वर्णन है।

उत्तरखण्ड सबसे बड़ा भाग है - जिसमें विष्णुभक्ति पर विशेष बल दिया गया है। माघ और कार्तिक-माहात्म्य पर यह अधिक चर्चा है। शिव-पार्वती संवाद के रूप में राम तथा कृष्ण की- कथाओं का उल्लेख करते हुए वहाँ 'भगवद्गीता' के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया है। 'राधा' को 'लक्ष्मी' माना गया है। उत्तरखण्ड का परिशिष्ट भाग 'क्रियासार-योग' है, जिसमें विष्णु-भक्ति के विभिन्न पहलूओं के विवेचन के साथ उनका समर्थन भी है। इसके साथ ही माधव और सुलोचना की प्रेमकथा का सुन्दर वर्णन भी प्रस्तुत है।

पद्मपुराण में विष्णु-भक्ति के विभिन्न पहलूओं का विवेचन करते हुए उसके अनेक पर्वों का सुन्दर चित्रण है। जैसे - राधा, शालिग्राम और तुलसी ये विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। अन्य पुराणों में- मत्स्य-पुराण से मिलनेवाली सृष्टिकथा इसमें प्राचीन है। राजवंशों का वर्णन भी प्राचीन ही है, किन्तु बहुत-सी परवर्ती धार्मिक-सामग्री है जिससे कुछ विद्वान् 4थी शताब्दी ई० से 15वीं शताब्दी ई० तक उसका विकास-काल मानते हैं।

Next भागवत पुराण study.